(पृष्ठ 32 का शेष ...)

दिल्ली (आत्मार्थी ट्रस्ट) : पण्डित सुबोधजी सिंघई सिवनी, **6. दिल्ली (विश्वासनगर) :** पण्डित सुदीपकुमारजी जैन बीना, **7. दिल्ली :** पण्डित श्री कैलाशचन्दजी शास्त्री बीकानेर, **8. दिल्ली (शिवाजी पार्क) :** पण्डित श्री सुरेशजी टीकमगढ़, **9. दिल्ली (इन्द्रपुरी/जनकपुरी बी 1) :** पण्डित मधुबनजी शास्त्री मुजफ्फरनगर, **10. भागलपुर :** पण्डित आकाशजी शास्त्री खनियांधाना, **11.बेलगांव :** पण्डित संजयजी शास्त्री सेठी जयपुर, **12. दिल्ली :** पण्डित अश्विनजी शास्त्री नौगामा, **13. दिल्ली :** पण्डित चिन्मयजी शास्त्री कोटा, **14. दिल्ली (धरमपुरा) :** पण्डित ऋषभजी जैन शास्त्री ललितपुर, **15. दिल्ली :** पण्डित निपुणजी शास्त्री सरदारशहर, **16. दिल्ली (आत्मार्थी ट्रस्ट) :** पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री (ध्रुवधाम), **17. दिल्ली (बहादुरगढ) :** पण्डित बसन्तजी शास्त्री जयपुर, **18. दिल्ली (पीरागढी) :** पण्डित प्रीतमजी शास्त्री (ध्रुवधाम), **19. दिल्ली (पालमगांव) :** पण्डित रॉकीजी शास्त्री (ध्रुवधाम), **20.दिल्ली (कैंट) :** पण्डित नीरजजी शास्त्री (ध्रुवधाम), **21.दिल्ली (ग्रीन पार्क) :** पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली, **22. दिल्ली (लॉरेन्स रोड़) :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री दिल्ली, **23. दिल्ली (रोहिणी) :** पण्डित संदीपजी शास्त्री दिल्ली, **24. दिल्ली (सरस्वती विहार) :** पण्डित प्रमोदजी शास्त्री (शाहगढ़) दिल्ली, **25. दिल्ली (कालकाजी) :** पण्डित संजीवजी जैन उस्मानपुर, **26. दिल्ली (सैनिक फार्म) :** विदुषी श्रुति जैन शास्त्री जयपुर, **27. दिल्ली (जवाहरपार्क) :** पण्डित विवेकजी शास्त्री (सागर) दिल्ली, **28. देहरादून (विकासनगर) :** पण्डित अशोककुमारजी उज्जैन, **29. लुधियाना :** पण्डित अंकित शास्त्री लूणदा, **30. श्रवणबेलगोला (लोहारिया यात्रा संघ) :** पण्डित संजयजी शास्त्री अरथूना, **31. दिल्ली (बिनौली) :** ब्र. सुधाबेनजी छिन्दवाड़ा, **32. दिल्ली (पाण्डव नगर) :** पण्डित जयदीपजी शास्त्री डडूका, **33. दिल्ली (जनकपुरी सी-2) :** पण्डित मयंकजी शास्त्री गढी, **34. दिल्ली (शंकर रोड़-राजेन्द्रनगर) :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री आंजना, **35. दिल्ली (बुधविहार) :** पण्डित मेघवीरजी शास्त्री, **36. दिल्ली (वसुन्धरा एन्क्लेव) :** पण्डित विकासजी शास्त्री बानपुर, **37. दिल्ली (वेदवाड़ा) :** पण्डित चैतन्यजी शास्त्री जबलपुर, **38. दिल्ली :** पण्डित भोगीलालजी जैन उदयपुर, **39. दिल्ली :** नितिनजी नोगलराय, **40. दिल्ली :** गौरवजी शास्त्री मेरठ, **41. दिल्ली (पालम कॉलोनी) :** पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना, **42. दिल्ली (पटपडगंज गांव) :** पण्डित राहुलजी शास्त्री सेमारी, **43. दिल्ली (सरोजनी नगर) :** पण्डित सुदीपजी शास्त्री ध्रुवधाम, **44. दिल्ली :** शैलेशजी शास्त्री इटावा, **45. दिल्ली :** पण्डित स्वतंत्रभूषणजी शास्त्री, **46. दिल्ली :** पण्डित अविनाशजी शास्त्री छिंदवाड़ा, **47. घटप्रभा :** पण्डित उदयजी शास्त्री जयपुर, **48. हिसार :** पण्डित निर्मलकुमारजी एडवोकेट एटा, **49.बेलगांव :** पण्डित स्वानुभव शास्त्री गुना, **50. फरीदाबाद :** पण्डित कैलाशचंदजी शास्त्री बीकानेर, **51. मदुरै :** पण्डित अजयजी शास्त्री पीसांगन, **52. यमुनानगर :** पण्डित दीपांशुजी शास्त्री एवं पण्डित रीतेशजी शास्त्री पिड़ावा कोटा, **53. कोलकाता :** पण्डित अंकितजी जैन खनियांधाना, **54. बेलगांव (जैन मिलन) :** पण्डित संतोषकुमारजी शास्त्री सनमण्णावर, **55. दिल्ली (फरीदाबाद) :** पण्डित कैलाशचंदजी शास्त्री बीकानेर, **56. लुधियाना :** विदुषी पूजा शास्त्री ध्रुवधाम, **57. रानीपुर (हरिद्वार) :** पण्डित शशांकजी शास्त्री सागर, **58. बागेवाड़ी :** पण्डित अजितजी कवठेकर शास्त्री निडोणी, **59. दिल्ली :** पण्डित रमेशचंदजी 'मंगल' शास्त्री सोनगढ, **60. अंबिकापुर :** पण्डित राशुल जैन, **61. चम्पापुर सिद्धक्षेत्र :** पण्डित जागेशजी शास्त्री जबेरा, **62. हैदराबाद :** पण्डित नयनजी शाह शास्त्री **63. मैसूर :** पण्डित आनंदकुमारजी जैन, **64. मंडला :** पण्डित अनंतराजजी शास्त्री, **65. गुलबर्ग :** पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री भीलवाड़ा।

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 30 (वीर नि. संवत् - 2537) 338 अंक : 2

महिमा है अगम...

महिमा है अगम जिनागम की ।। महिमा।।

जाहिं सुनत जड़ भिन्न पिछानी, हम चिन्मूरति आतम की ।

महिमा है अगम... ।। 1 ।।

रागादिक दुखकारन जाने, त्याग बुद्धि दीनी भ्रम की।

ज्ञान ज्योति जागी घट अन्तर, रुचि वाढी पुनि शम-दम की ।

महिमा है अगम... ।। 2 ।।

कर्म बन्ध की भई निरजरा, कारण परम्परा क्रम की।

'भागचन्द' शिव लालच लागो, पहुँच नहिं है जहाँ जम की।

महिमा है अगम... ।। 3 ।।

– कविवर पण्डित भागचंदजी

छहढाला प्रवचन

निश्चय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र का व्याख्यान

परद्रव्यनतैं भिन्न आपमें रुचि सम्यक्त्व भला है;
आपरूप को जानपनो सो सम्यक्ज्ञान कला है।
आपरूप में लीन रहे थिर सम्यक्चारित सोई;
अब व्यवहार मोक्षमग सुनिये, हेतु नियत को होई।।२।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

निराकुल सुखरूप मोक्ष आत्मा का हित है और सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र उसका मार्ग है; जीव को अपने हित के लिए ऐसे मोक्षमार्ग में लगना चाहिए - ऐसा पहले छंद में कहा, अब दूसरे छंद में उस सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र का व्याख्यान करते हैं -

आत्महित के लिए यह सच्चे मोक्षमार्ग का वर्णन है; उसमें प्रथम निश्चय सम्यग्दर्शन पर से भिन्न अपने शुद्धात्मा की रुचिरूप है; आत्मा की रुचिरूप वह सम्यग्दर्शन भला है, श्रेष्ठ है और आत्मा के यथार्थस्वरूप का जानपना (ज्ञान) सम्यग्ज्ञानरूप वीतरागी कला है; आत्मस्वरूप को जानने वाला यह ज्ञान मोक्ष का कारण होता है और वह स्वयं निराकुल आनन्दरूप है। इसप्रकार अपने आत्मा की रुचि व ज्ञान करके उसमें लीन होकर स्थिर रहना सम्यक्चारित्र है। देखो ! इसमें कहीं राग नहीं आया। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र तीनों राग से रहित हैं - ऐसे मोक्षमार्ग को पहचान कर उसके उद्यम में निरन्तर लगे रहना चाहिए। यह निश्चयमोक्षमार्ग कहा। अब व्यवहारमोक्षमार्ग जो कि निश्चयमोक्षमार्ग का निमित्तरूप हेतु है, उसका कथन आगे के छंद में करेंगे।

परद्रव्यों से भिन्न, परसन्मुख रागादि भावों से भिन्न और अपने स्वभावों से अभिन्न ऐसे अपने आत्मा की श्रद्धा (रुचि) सम्यग्दर्शन है। सम्यग्दृष्टि जीव गृहस्थदशा में, व्यापार-धंधे में या राजपाट में हो, शुभाशुभभाव होते हों, तो भी अन्तर की दृष्टि में वह अपने आत्मा को उन सबसे भिन्न शुद्ध चैतन्यभावरूप ही देखता है। परद्रव्य का संबंध होते हुए भी उससे भिन्न चैतन्यस्वरूप आत्मा मैं हूँ - इसप्रकार वह स्वद्रव्य

की श्रद्धा करता है; यह सम्यक्त्व भला है-हितरूप है-कल्याणरूप है। निश्चय सम्यग्दर्शन को भला कहा है, वही सत्यार्थ है, वही सच्चा मोक्षमार्ग है।

आत्मा की रुचि को सम्यक्त्व कहा अर्थात् निश्चय सम्यग्दर्शन का विषय अकेला स्वतत्त्व है। पर से भिन्न अपने स्वतत्त्व को लक्ष में लेने से, राग से भी भिन्न अनुभव होता है। ऐसे अनुभवपूर्वक आत्मा की श्रद्धा निश्चय सम्यग्दर्शन है; इसमें अकेले स्वतत्त्व में दृष्टि (एकत्वबुद्धि, तन्मयता) है। स्व में लक्ष करते ही परद्रव्य और परभावों के साथ एकत्वबुद्धि छूट जाती है। इसप्रकार स्व में स्वबुद्धिरूप आत्मरुचि ही सम्यग्दर्शन है।

'आप में रुचि' – आप अर्थात् अपना आत्मा, उसका स्वरूप पहचानकर, निर्विकल्प स्वसंवेदन सहित उसकी श्रद्धा करनी चाहिए। बाह्यदृष्टि से संयोग और राग में 'यह मैं' ऐसी मिथ्याबुद्धि थी, उसको छोड़कर अंतर में 'यह मैं' ऐसी निजस्वभाव की प्रतीति करने पर सम्यक्त्व हुआ, अपना आत्मा जैसा है, वैसा पहचान में आ गया। अकेले शुद्ध स्वभाव में ही रुचि का प्रवेश हुआ, तब विकल्प में रुचि नहीं रही या उसके अवलम्बन से धर्म का कुछ लाभ होगा – ऐसी बुद्धि नहीं रही। पर और विकल्प से भिन्न शुद्धात्मरूप होकर परिणमा; ऐसा सम्यक् परिणमन भला है, शुद्ध है, निश्चय मोक्षमार्ग का अंग है और मोक्ष साधने की कला है। 'रुचि सम्यक्त्व भला है और सम्यक्ज्ञान कला है।' आत्मा की रुचि व ज्ञान मोक्ष के साधने की उत्तम कला है। पर का या शास्त्र का जानपना कला नहीं है; परन्तु आपरूप अर्थात् आत्मा का स्वरूप, उसको पर से भिन्न जानना ही सच्ची ज्ञानकला है। बाहर की अनेक कला जीव ने सीख ली; परन्तु आत्मज्ञान की कला उसने पूर्व में कभी नहीं जानी। जब ज्ञान आत्मस्वभाव की ओर सन्मुख हुआ, तब सम्यक्ज्ञान की कला खिली, आत्मज्ञान हुआ और मोक्षमार्ग खुल गया। आत्मा का ज्ञान होने पर नवतत्त्व आदि का व्यवहार जानपना (ज्ञान) गौण हो गया। 'जिसने आत्मा को जाना, उसने सब कुछ जान लिया' उसको ज्ञान की कला खिल गई, अब वृद्धिंगत होकर केवलज्ञानरूपी पूर्णिमा होगी। केवलज्ञान प्रगट करने के लिए यह सम्यग्ज्ञानकला है, वह केवलज्ञान के साथ आनन्द की केलि करती है, आनन्द की क्रीड़ा करती हुई वह केवलज्ञान को साधती है। अहा ! चौथे गुणस्थान वाले गृहस्थ का सम्यग्ज्ञान भी केवलज्ञान की जाति का ही है। जिसप्रकार पूर्ण चन्द्र का अंश भी चन्द्रमा की जाति का ही होता है, उसी प्रकार सम्यक् मति-श्रुतज्ञान भी केवलज्ञान की जाति का ही है,

वह राग की जाति का नहीं है। अहा, शुद्ध चैतन्यस्वरूप का ज्ञान होते ही केवलज्ञान की एक कला खिली। ऐसी भेदज्ञानकला मोक्ष को साधने वाली है।

परद्रव्यनतैं भिन्न आप में रुचि सम्यक्त्व भला है।
आपरूप को जानपनो सो सम्यग्ज्ञान कला है।।

हे जीव ! मोक्षसुख के लिए तू ऐसे सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप मोक्षमार्ग में उद्यमी हो। अपने आत्मा के सन्मुख होकर आत्मा की रुचि सम्यग्दर्शन है, आत्मा का ज्ञान सम्यग्ज्ञान है और सम्यक्चारित्र कैसा है ? कि -

आपरूप में लीन रहे थिर सम्यक्चारित सोई।

पर से भिन्न अपना जो स्वरूप रुचि में और ज्ञान में लिया, उसी निजस्वरूप में स्थिरता-लीनतारूप वीतरागभाव सम्यक्चारित्र है। देखो ! भगवान ने निजस्वरूप में लीनता को चारित्र व मोक्षमार्ग कहा है; शुभराग को चारित्र या मोक्षमार्ग नहीं कहा। शुभाशुभ क्रियाएँ कर्म के आस्रव का हेतु हैं; उनसे निवृत्ति और शुद्ध ज्ञानस्वरूप में प्रवृत्ति मोक्षमार्ग का चारित्र है; ऐसे सम्यक्चारित्र में सदा लगने को कहा है। अरे ! बहुत जीवों को तो यह भी मालूम नहीं है कि सच्चा चारित्र क्या है ? सच्चे श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र का स्वरूप यहाँ संक्षेप में दिखाया है। मोक्षमार्गरूप सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र - ये तीनों भाव आत्मा में समाते हैं, वे राग या शरीर की क्रिया में नहीं रहते।

सहज एक ज्ञायकभावरूप शुद्ध आत्मा, जो शुभाशुभ रागादि परभावरूप कभी नहीं हुआ, उसकी अंतरंग अनुभूति में 'यही मैं' - ऐसी निर्विकल्प प्रतीति सम्यग्दर्शन है। आत्मा जैसा है, वैसा अच्छी तरह जानकर उसकी श्रद्धा होती है। सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन और सम्यक् अनुभूति - तीनों एक साथ होते हैं। जिस वस्तु का ज्ञान ही न हो, उसकी श्रद्धा कैसे करेगा ? वस्तु के ज्ञान से रहित श्रद्धा सच्ची नहीं होती, वह तो गधे के सींग की श्रद्धा करने जैसी मिथ्या श्रद्धा है। श्रद्धा किसकी ? जो वस्तु सत् हो, उसकी।

सत् स्वरूप ज्ञायकस्वभाव को दृष्टि व ज्ञान में लेने पर सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान हुआ; उसके साथ आनन्द का अनुभव भी है। ऐसे आनन्दस्वरूप आत्मा का ज्ञान ही सच्चा ज्ञान है, वही शुद्ध ज्ञान की कला है, वही मोक्ष को साधने वाली वीतरागी विद्या है। मोक्ष की प्राप्ति के लिए यह 'बीज-ज्ञान' है। जो ज्ञान की बीज (दूज) उगी, वह बढ़कर पूनम होगी। **(क्रमशः)**

नियमसार प्रवचन ह्न

विभावस्वभावों का स्वरूप

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 41वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

णो खइयभावठाणा णो खयउवसमसहावठाणा वा।
ओदइयभावठाणा णो उवसमणे सहावठाणा वा।।41।।

इस जीव के क्षायिक क्षयोपशम और उपशम भाव के।
एवं उदयगत भाव के स्थान भी होते नहीं ।।41।।

जीव को क्षायिकभाव के स्थान नहीं हैं, क्षयोपशमस्वभाव के स्थान नहीं हैं, औदयिकभाव के स्थान नहीं हैं अथवा उपशमस्वभाव के स्थान नहीं हैं।

(गतांक से आगे...)

(मालिनी)

सुकृतमपि समस्तं भोगिनां भोगमूलं,
त्यजतु परमतत्त्वाभ्यासनिष्णातचित्त:।
उभयसमयसारं सारतत्त्वस्वरूपं,
भजतु भवविमुक्त्यै कोऽत्र दोषो मुनीश:।।५९।।

(हरिगीत)

भोगियों के भोग के हैं मूल सब शुभकर्म जब।
तत्त्व के अभ्यास से निष्णातचित मुनिराज तब।।
मुक्त होने के लिए सब क्यों न छोड़ें कर्म शुभ।
क्यों ना भजें शुद्धातमा को प्राप्त जिससे सर्व सुख।।५९।।

श्लोकार्थ :- समस्त सुकृत (शुभ कर्म) भोगियों के भोग का मूल है; परम तत्त्व के अभ्यास में निष्णात मुनीश्वर भव से विमुक्त होने हेतु उन समस्त शुभ कर्मों को छोड़ो और सारतत्त्वरूप द्रव्य और भाव - ऐसे उभय समयसार को भजो। इसमें क्या दोष है ?

शुभभाव संसार का मूल है, अतः हे मुनि! अस्थिरता के शुभाशुभभाव को छोड़कर त्रिकाली शुद्धस्वभाव को भजो।

दया, दान, व्रत, तप, पूजा, भक्ति, स्वाध्यायादि के फल में अनुकूल संयोग मिलते हैं, वे संसार हैं, भोगियों के भोग के मूल हैं। वे शुभभाव आत्मा के धर्म का कारण नहीं है। इसलिए आचार्य भगवान कहते हैं कि ''धर्मी जीव को संयोगों की तथा संयोगों के कारणभूत शुभभावों की रुचि नहीं होनी चाहिए; अपूर्णदशा में यद्यपि शुभराग आता है; किन्तु वह धर्म का कारण नहीं है। हे धर्मी मुनियों ! आत्मा शुद्ध चिदानन्दस्वरूप है - ऐसे अन्तःतत्त्व के अभ्यास में निपुणज्ञानवाले मुनियों ! निर्मलपरिणाम वाले मुनियों ! स्वर्गादि के भव से विमुक्त होने के लिए शुभभाव की तरफ का लक्ष छोड़ो।''

मुनियों को शुभभाव का आदर तो है ही नहीं, उसका तो निषेध ही वर्तता है; परन्तु अस्थिरता के शुभभाव को भी छोड़ो - ऐसा कहते हैं। शुद्धस्वभाव और उससे प्रगटित शुद्धपर्याय - इसप्रकार दोनों समयसार को भजो। त्रिकालस्वभाव की सेवा करने में दोनों की सेवा आ जाती है; दोनों में अविनाभावी सम्बन्ध है। यह तो समझाने की - उपदेश की शैली है कि शुभव्यवहार को छोड़ो और शुद्धस्वभाव जो निश्चय है उसको भजो; वास्तव में तो शुद्धस्वभाव का ग्रहण करते ही निर्मलपर्याय प्रगट होती है और शुभभाव स्वयं ही छूट जाता है - छोड़ना नहीं पड़ता।

किसी जिज्ञासु ने **प्रश्न** किया कि यदि प्रतिक्रमण का समय हो गया हो और उस समय शुक्लध्यान आ जावे तो शुक्लध्यान में लीन हो जाना उचित है या प्रतिक्रमण करना ?

वक्ता ने **उत्तर** दिया - ''प्रतिक्रमण करना योग्य है।''

इसप्रकार उत्तरदाता वक्ता मिथ्यादृष्टि है; क्योंकि उसे शुभभाव का आदर और निज शुद्धभाव का अनादर-तिरस्कार वर्त रहा है, वह मिथ्यात्वी है और उसे प्रतिक्रमण भी हो सकता नहीं। अरे ! सम्यग्दृष्टि को तो शुद्धस्वभावरूपी अमृत का भान है, उसे तो प्रतिक्रमण के शुभभाव में आना विषतुल्य प्रतिभासित होता है। इसलिये यहाँ कहते हैं कि व्यवहार प्रतिक्रमण उड़ जाय, पाँच समिति इत्यादि के पालन करने का शुभभाव भी उड़ जाय और मुनि शुद्धस्वभाव में ठहर जाय - स्थिर हो जाय तो क्या बाधा है ? कोई बाधा नहीं। मुनि तो निर्दोषता की वृद्धि करता हुआ मोक्षदशा को उपलब्ध करेगा। ●

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : 'ज्ञेय-ज्ञायकपने का निर्दोष सम्बन्ध धर्मात्मा को होता है।' कृपया समझाइये ?

उत्तर : शरीर-मन-वाणी परवस्तुएँ हैं, उनसे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं; इसलिये 'उनकी अनुकूल क्रिया हो तो मुझे ठीक और प्रतिकूल क्रिया हो तो मुझे अठीक'- ऐसे उनके प्रति मुझे कोई पक्षपात नहीं है, चैतन्यज्योति ही मेरा स्वभाव है - इसप्रकार प्रथम अपने स्वभाव की पहचान करना चाहिये। ज्ञानी जानता है कि मैं तो ज्ञाता हूँ और ये शरीरादि सब पदार्थ मेरे ज्ञेय हैं। मैं ज्ञाता और ये ज्ञेय - इसके अलावा अन्य कोई सम्बन्ध हमारा इनके साथ नहीं है। जिसप्रकार जननी के साथ पुत्र का मातारूप निर्दोष सम्बन्ध के अतिरिक्त अन्य किसी अटपटे सम्बन्ध की कल्पना कभी स्वप्न में भी नहीं हो सकती; उसीप्रकार मैं चैतन्यमूर्ति आत्मा ज्ञायक हूँ और सारे पदार्थ मेरे ज्ञेय हैं, इस ज्ञेय-ज्ञायक निर्दोष सम्बन्ध के अतिरिक्त अन्य कोई सम्बन्ध मेरा परद्रव्य के साथ स्वप्न में भी नहीं है; मेरा तो उनके साथ मात्र जानने भर का ही सम्बन्ध है।

जैसे अंधकार में कोई पुरुष किसी को भ्रम से अपनी स्त्री समझकर विकारपूर्ण भाव से उसके समीप गया, तत्काल विद्युत् प्रकाश में उसका अवलोकन होते ही ज्ञान हुआ कि यह तो मेरी माता है, वहाँ तब तुरन्त ही उसकी वृत्ति पलट जाती है कि अरे ! यह तो मेरी जननी है। जननी की पहिचान होते ही विकारवृत्ति पलटी और माता-पुत्र के सम्बन्धरूप निर्दोषवृत्ति जागृत हुई। वैसे ही अज्ञानदशा में परवस्तु को अपनी मानकर उसमें इष्टानिष्ट कल्पना करता था और कर्त्ता-भोक्ता का भाव करके विकाररूप परिणमता था; किन्तु ज्ञानप्रकाश होने पर भान हुआ कि अहो ! मेरा तो ज्ञायकस्वभाव है और इन पदार्थों का ज्ञेयस्वभाव है - ऐसा निर्दोष ज्ञेय-ज्ञायक सम्बन्ध का भान होते ही धर्मी को विकारभाव का नाश होकर निर्दोष ज्ञायकभाव प्रकट होता है। अभी अस्थिरता का राग-द्वेष होने पर भी धर्मी की रुचि पलट गई है कि मैं तो चैतन्यस्वरूप सबका जाननेवाला हूँ, अन्य पदार्थों के साथ मेरा ज्ञेय-ज्ञायक स्वभावरूप सम्बन्ध के अतिरिक्त कोई सम्बन्ध नहीं है।

समाचार दर्शन -

34वां आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सानन्द संपन्न

जयपुर (राज.) : आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के मंगल प्रभावना में संस्थापित 'श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट' द्वारा विगत 33 वर्षों से 'श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर' में आध्यात्मिक शिक्षण शिविरों की परम्परा अनवरत रूप से चलती आ रही है। इसी शृंखला में इस वर्ष रविवार दिनांक 31 जुलाई से मंगलवार 9 अगस्त 2011 तक 34वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

शिक्षण शिविर का उद्घाटन श्री विमलकुमारजी जैन नीरु केमिकल्स दिल्ली के करकमलों से हुआ। इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री वाडीलाल लल्लूभाई शाह अहमदाबाद के प्रतिनिधि के रूप में श्री अमृतभाई मेहता फतेपुर ने की।

श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट का परिचय श्री सुमनभाई दोशी राजकोट ने दिया। मंचासीन समस्त अतिथियों का तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री सुमनभाई दोशी एवं (सदस्य) श्री अशोककुमारजी जैन जबलपुर ने तिलक लगाकर माल्यार्पण किया।

उद्घाटन सभा के मुख्य अतिथि श्री अभयकरणजी सेठिया सरदारशहर एवं श्री मदनलालजी पाटनी मुम्बई रहे। उद्घाटन सभा के पूर्व शिविर मण्डप का उद्घाटन श्री गम्भीरमलजी प्रकाशचंदजी सेमारी अहमदाबाद ने, शिविर मंच का उद्घाटन श्री निहालचंदजी ओसवाल जयपुर ने एवं विधान का उद्घाटन श्री विमलकुमारजी जैन जबलपुर ने किया। ध्वजारोहण श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ परिवार के करकमलों से हुआ। आचार्य कुन्दकुन्द के चित्र का अनावरण श्री श्री पी.के.जैन रुड़की एवं आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के चित्र का अनावरण श्री दिलीपभाई शाह जयपुर द्वारा किया गया। 34वें शिक्षण शिविर के आयोजनकर्ता श्री भभूतमलजी भंडारी बैंगलोर, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा एवं श्री नवीनचंदजी केशवचंदजी मेहता मुम्बई रहे।

इस अवसर पर नवलब्धि विधान का आयोजन किया गया, जिसके आयोजक श्री बाबूलालजी पंचोली थांदला, श्री मगनलालजी मामा आरोन, श्री नेमीचंदजी ग्वालियर, श्री देवेन्द्रकुमार कोमलचंदजी जैन केसली, श्रीमती ममता कमलकुमारजी केसली, श्रीमती नत्थीबेन केसली, श्रीमती कमलरानी बाबूलालजी सिंघई केसली थे।

कार्यक्रम का संचालन ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री सनावद ने किया।

विद्वत् शिरोमणि डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने शिविर के महत्व एवं उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

शिक्षण शिविर में प्रतिदिन गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के मांगलिक सी.डी. प्रवचन के साथ-साथ डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के समयसार, डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी के प्रात:काल समयसार एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक, पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड आदि के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

प्रतिदिन चलने वाली प्रौढ कक्षाओं में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर द्वारा निमित्त-

उपादान, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री सनावद द्वारा छहढाला, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा गुणस्थान विवेचन, पण्डित प्रकाशचंदजी छाबड़ा इन्दौर द्वारा गोम्मटसार, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा कार्तिकेयानुप्रेक्षा की कक्षा ली गई।

दोपहर की सभा में प्रतिदिन बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् महाविद्यालय के छात्र विद्वानों द्वारा प्रवचन तदुपरान्त आयोजित व्याख्यानमाला में पण्डित गुलाबचंदजी बीना, डॉ. दीपकजी जैन जयपुर, पण्डित सुरेशजी टीकमगढ, पण्डित विनोदजी जबेरा, पण्डित अनिलजी भिण्ड आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

प्रात:कालीन प्रौढ कक्षाओं में पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, पण्डित विनोदजी जबेरा, ब्र. विनोदजी गुना, पण्डित कमलजी जबेरा, पण्डित शेषकुमारजी उभेगांव, पण्डित जगदीशजी उज्जैन इत्यादि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

विधि-विधान के समस्त कार्यक्रम पण्डित सुनीलजी भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर एवं पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर द्वारा संपन्न हुये।

शिक्षण शिविर के समस्त कार्यक्रम ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री, श्री अशोकजी जबलपुर, श्री महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा एवं पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा के निर्देशन में संपन्न हुये।

स्नातक परिषद का प्रथम सम्मेलन संपन्न

नवागढ-परभणी (महा.) : यहाँ पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद जयपुर द्वारा संगठित महाराष्ट्र प्रान्तीय स्नातक परिषद की कार्यकारिणी का प्रथम सम्मेलन दिनांक 7 अगस्त को बहुत उत्साह के साथ संपन्न हुआ।

प्रात: 9 बजे सामूहिक जिनेन्द्र पूजन के पश्चात् सम्मेलन का उद्घाटन क्षेत्र के मंत्री मा. माणिकचंदजी तर्टे की अध्यक्षता में तथा श्री निलेश माणिकचंदजी विनायके के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। उद्घाटन के अवसर पर डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर द्वारा प्रेरक व मार्मिक व्याख्यान हुआ।

इस सम्मेलन में महाराष्ट्र में सुचारु रूप से तत्त्वप्रचार करने एवं छात्रों की आजीविका के समाधान के संबंध में विचार विमर्श हुआ। साथ ही प्रतिवर्ष दो बार सम्मेलन के रूप में सभी स्नातकों ने एकत्रित होने का निर्णय लिया।

अग्रिम सम्मेलन अ.भा.जैन युवा फैडरेशन शाखा औरंगाबाद की ओर से औरंगाबाद में करने का सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया।

इस सम्मेलन में डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित जिनचंद्रजी आलमान हेरले, पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, पण्डित कीर्तिंजय गोरे, पण्डित उमाकांतजी बंड, पण्डित अनंतजी विश्वम्भर, पण्डित हेमन्तजी बेलोकर, पण्डित अमोलजी सिंघई आदि 39 स्नातकों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

संपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन श्री आलोकजी शास्त्री कारंजा एवं श्री अशोकजी वानरे सेलू द्वारा किया गया।

दशलक्षण महापर्व में धर्म प्रभावनार्थ कहाँ-कौन ?

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 2 सितम्बर 2011 से प्रारम्भ हो रहे दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर तत्त्वप्रचारार्थ विद्वान भेजे जा रहे हैं। पर्व के प्रारंभ होने में लगभग 15 दिन का समय शेष है, तथापि दिनांक 18 अगस्त 2011 तक हमारे पास 452 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं और अभी भी अनेक स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो रहे हैं। दिनांक 18 अगस्त 2011 तक लिये गये निर्णयानुसार अब तक लगभग 429 स्थानों पर ही विद्वान निश्चित हो सके हैं; शेष स्थानों पर विद्वान निश्चित करना बाकी है। अभी तक तैयार सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है ह्न

विशिष्ट विद्वानों में ह्न 1.कोटा : बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा **2.मुम्बई (भायंदर-वेस्ट) :** डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर **3.जयपुर (स्मारक भवन) :** पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर **4.बड़नगर :** डॉ. उत्तमचंदजी जैन सिवनी **5.भिण्ड (परमागम मंदिर) :** ब्र. यशपालजी जैन जयपुर **6.सोनागिरजी :** पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन सोनागिरि **7.वस्त्रापुर-अहमदाबाद :** ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियाँधाना **8.सहारनपुर :** पण्डित विमलप्रकाशजी झांझरी उज्जैन, **9.जयपुर (आदर्श नगर) :** ब्र. अभिनंदनकुमारजी शास्त्री खनियाँधाना **10.गजपंथा :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर **11.मुम्बई (मलाड) :** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली **12.जयपुर :** पण्डित पूनमचंदजी छाबडा इन्दौर **13. सागर गोरमूर्ति (परकोटा) :** ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली, **14.शिरूर :** ब्र. संवेगी केशरीचन्दजी 'धवल' **15.राजकोट :** ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली **16.सोलापुर :** पण्डित कपूरचंदजी 'कौशल' भोपाल **17. अहमदाबाद (नवरंगपुरा) :** पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, **18. भोपाल (कोहेफिजा) :** पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर **19. देवलाली :** डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर **20.मुम्बई (बोरीवली) :** पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, **21. उ.प्र. के विभिन्न स्थानों पर :** पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन, **22. 23. औरंगाबाद :** पण्डित दिनेशभाई शहा मुम्बई, विदुषी डॉ. उज्ज्वला शहा मुम्बई **24. राजकोट :** पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, **25.इन्दौर (पलासिया) :** पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड **26.आगरा :** ब्र. कैलाशचन्द्रजी अचल **27.ललितपुर :** डॉ. दीपकजी जैन जयपुर **28.कोलकाता :** पण्डित राजकुमारजी शास्त्री ध्रुवधाम बांसवाड़ा।

विदेश में - 1.लंदन : पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, **2.नैरोबी :** पण्डित शैलेषभाई तलोद, **3.सॉन्फ्रान्सिस्को :** डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, **4.नैरोबी :** पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री पिड़ावा **5.बैंकॉक :** पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री बरेलीवाले इन्दौर।

मध्यप्रदेश प्रान्त

1. अशोकनगर : पण्डित देवेन्द्रकुमार बिजौलिया, **2. अम्बाह :** पण्डित कस्तूरचंदजी बजाज भोपाल, **3. भोपाल (कस्तूरबा नगर) :** डॉ. महेश शास्त्री गुढ़ावाले, **4. भोपाल (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित श्रेणिकजी जैन जबलपुर, **5. भिण्ड (देवनगर) :** पण्डित चैतन्य शास्त्री कोटा, **6. रायपुर (शंकरनगर) :** पण्डित प्रवीणजी शास्त्री रायपुर, **7. बीड :** पण्डित समकितजी बांझल गुना कोटा, **8. गुना (वी.वि. भवन) :** डॉ. आर.के. जैन विदिशा, **9. छिन्दवाड़ा :** पण्डित विपिनकुमारजी शास्त्री नागपुर, **10. मुक्तागिरी सिद्धक्षेत्र :** पण्डित राजूभाई जैन कानपुर, **11.ग्वालियर (फाल्केबाजार) :** ब्र. सुनीलकुमारजी शास्त्री शिवपुरी, **12.ग्वालियर (थाटीपुर)**

: पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी जैन उज्जैन, **13. हरदा :** विदुषी कुसुमलताजी जैन, **14. इन्दौर (रामचन्द्रनगर) :** पण्डित गौरवजी शास्त्री इन्दौर, **15. इन्दौर (रामचन्द्रनगर) :** पण्डित गौरवजी शास्त्री इन्दौर, **16. इन्दौर (साधनानगर) :** पण्डित नीलेशभाई शाह, मुम्बई, **17. इन्दौर (माणकचौक) :** पण्डित प्रकाशचन्दजी छाबड़ा इन्दौर, **18. जबलपुर (मुमुक्षु मंडल) :** ब्र. वासन्तीबेन देवलाली, **19. केसली :** पण्डित रूपचन्दजी जैन बंडा, **20.21. मौ :** ब्र.अल्काबेन भिण्ड, ब्र.अर्चनाबेन भिण्ड, **22.शिवपुरी- छतरी रोड़ (शान्तिनाथ जिनालय) :** पण्डित अभयकुमारजी जैन, बदरवास, **23. सिंगोली :** पण्डित राजेशजी शास्त्री, **24. घोड़ा डूँगरी :** पण्डित सुरेशचंदजी शास्त्री, **25. मन्दसौर (गोल चौराहा नई आबादी) :** डॉ. नरेन्द्रकुमारजी जैन जयपुर, **26. बीना :** पण्डित सचिन जैन अकलूज खनियाधाना, **27. बण्डा बेलइ :** ब्र. रविकुमारजी ललितपुर, **28. बेगमगंज :** पण्डित सौमिलजी मोदी शास्त्री खनियांधाना, **29. इन्दौर (शक्कर बाजार) :** पण्डित नेमीचन्दजी ग्वालियर, **30. इन्दौर (गांधीनगर) :** पण्डित अनिलजी इंजी. भोपाल, **31.जावरा :** पण्डित धीरजजी जबेरा, **32. जबेरा :** ब्र. विमलाबेन जयपुर, **33. खुरई :** पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, **34. कुचडौद :** पण्डित विमलचंदजी जैन लाखेरी, **35. गौरमी :** पण्डित अर्पितजी शास्त्री सेमारी, **36. सिलवानी :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी पिपरई, **37. टीकमगढ़ :** ब्र. अमित भैया विदिशा, **38. विदिशा (किला अन्दर) :** पण्डित निर्मलकुमारजी जैन सागर, **39. सोनागिर :** डॉ. विनोद शास्त्री चिन्मय विदिशा, **40.सोनागिर :** डॉ. मुकेश शास्त्री तन्मय विदिशा, **41.सोनागिर :** पण्डित मांगीलालजी जैन कोलारस, **42. सोनागिर :** पण्डित लालजीरामजी जैन विदिशा, **43. रतलाम :** पण्डित विनोदजी जबेरा, **44. सनावद :** पण्डित आकेशजी छिंदवाड़ा, **45. सूखा निसईजी (दमोह) :** पण्डित कपूरचन्दजी समैया सागर, **46. सागर (मकरोनिया) :** पण्डित कमलचन्दजी जैन पिड़ावा, **47. सिंगोली :** पण्डित ज्ञानचंदजी झालावाड़, **48. भोपाल (कोहेफिजा) :** विदुषी प्रतीति पाटील, **49. इन्दौर :** पण्डित अशोकजी शास्त्री रायपुर, **50.गोरमी :** पण्डित अर्पितजी शास्त्री सेमारी, **51.शिवपुरी :** ब्र. पुष्पाबेन, ब्र. ज्ञानधारा झांझरी उज्जैन, **52. खनियांधाना :** पण्डित अरुणजी मोदी सागर, **53. ग्वालियर (सोडा का कुआ) :** पण्डित सतीशजी जैन पिपरई, **54. राघौगढ़ :** पण्डित शीतलजी पाण्डे उज्जैन, **55. शहडौल :** पण्डित सुदीपजी शास्त्री बरगी, **56. सागर (तारनतरन) :** पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल इन्दौर, **57. ग्वालियर (मुरार) :** पण्डित सुनीलकुमारजी शास्त्री, **58. गढ़ाकोटा :** पण्डित अरुणजी मड़वैया बानपुर, **59. इन्दौर (रामाशा मन्दिर) :** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ़, **60.कोलारस (चौधरी मौहल्ला) :** पण्डित धवलकुमारजी शास्त्री ध्रुवधाम, **61. कोलारस (होटल फूलराज) :** पण्डित निशांतकुमारजी शास्त्री वारासिवनी, **62. बदरवास :** ब्र. सुकुमाल झांझरी उज्जैन, **63. आरोन :** विदुषी पुष्पा जैन खंडवा, **64.गौरझामर :** पण्डित जिनेन्द्रजी जैन जबलपुर, **65. जबलपुर (रांझी) :** पण्डित राहुल जैन रानीपुर, **66. बेतूल :** पण्डित संजयजी पुजारी खनियांधाना, **67. शाहगढ़ :** पण्डित कैलाशचंदजी महरौनी, **68.उज्जैन :** पण्डित प्रद्युम्नकुमारजी मुजफ्फरनगर, **69. सिवनी :** पण्डित प्रकाशचंदजी झांझरी उज्जैन, **70. इन्दौर (विजयनगर) :** पण्डित पदमजी अजमेरा, **71. भोपाल (11 सौ क्वार्टर्स) :** पण्डित सुरेशचंदजी सिंघई इंजी. भोपाल, **72. करैरा :** पण्डित किशनजी जैन कोलारस, **73. इन्दौर (लश्करी गोठ) :** पण्डित संजय शास्त्री दौसा, **74. गुना (शान्तिनाथ मन्दिर) :** पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, **75. जावर (सिहोर) :** पण्डित पदमकुमारजी जैन कोटा, **76. बड़गाँव :** पण्डित वैभवजी शास्त्री बांसवाड़ा, **77. चन्देरी :** पण्डित रमेशचन्दजी बांझल, इन्दौर, **78. नरवर :** पण्डित बाबूलालजी वैद्य खुरई, **79. पंधाना :** पण्डित

हुकमचन्दजी सिंघई राघौगढ़, **80. अमलाई :** पण्डित आशीषजी शास्त्री कोटा, **81.बेरसिया :** पण्डित सरदारमलजी जैन, **82. होशंगाबाद :** पण्डित निकलेशजी शास्त्री दलपतपुर, **83. उदयपुरा :** पण्डित शेषकुमारजी उभेगांव छिंदवाडा, **84. ग्वालियर :** पण्डित विकासजी शास्त्री खनियांधाना, **85. सुसनेर :** पण्डित मुरालीलालजी जैन नरवर, **86.दलपतपुर :** पण्डित सुनीलकुमारजी देवरी, **87. इन्दौर (गांधीनगर) :** पण्डित विकासजी छाबड़ा, **88. निसईजी (मल्हारगढ) :** पण्डित अंकुरजी शास्त्री देहगांव, **89. शुजालपुर मण्डी :** पण्डित पद्मचंदजी गंगवाल इन्दौर, **90. निसईजी (मल्हारगढ) :** पण्डित रतनलालजी जैन होशंगाबाद, **91. निसईजी (मल्हारगढ) :** विदुषी पुष्पाबेन होशंगाबाद, **92. छिंदवाडा (पार्श्वनाथ मंदिर) :** पण्डित कमलकुमारजी जैन जबेरा, **93. कालापीपल :** पण्डित महेन्द्रकुमारजी सेठी, **94. गोहद :** पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी जैन सागर, **95. सोनागिर :** ब्र. महेन्द्रकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, **96. अमायन :** पण्डित सचिनजी मोदी खनियांधाना, **97. मौ :** पण्डित मुकेशजी कोठादार, **98. घुवारा :** पण्डित अपूर्वजी शास्त्री, इटावा, **99. फोपनार :** पण्डित सुदीपजी तलाटी घाटोल, **100. सागर (बालक हिल व्यू) :** पण्डित सन्मति मोदी शास्त्री दलपतपुर, **101. पचमढी :** पण्डित रतनचंदजी शास्त्री कोटा, **102. सोनागिर :** पण्डित विजयजी शास्त्री बोरालकर, **103. आरोन :** पण्डित अंकुरजी शास्त्री मैनपुरी कोटा, **104. सनावद :** पण्डित नवीनजी जैन, **105. शहपुरा भिटौनी :** पण्डित अचलजी शास्त्री खनियांधाना, **106. बदरवास :** पण्डित राहुलजी शास्त्री बदरवास, **107.करेली :** पण्डित अभिषेक जैन उभेगांव, **108. धामनोद :** पण्डित दिनेशजी कासलीवाल उज्जैन, **109. मन्दसौर (कालाखेत) :** पण्डित महेशचन्दजी जैन ग्वालियर, **110. अकाझिरी :** पण्डित सनतजी शास्त्री बकस्वाहा, **111. शाहपुर (बुरहानपुर) :** पण्डित नीतेशजी झालरापाटन, **112.रहली :** पण्डित शैलेषजी शास्त्री ध्रुवधाम, **113. गुना :** पण्डित सुरेशचंदजी शास्त्री कोलारस, **114. छिन्दवाड़ा :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री, **115. दमोह (चैत्यालय) :** पण्डित प्रदीपकुमारजी शास्त्री, **116. बदरवास :** पण्डित राहुलजी शास्त्री, **117. भोपाल (नेहरु नगर) :** पण्डित तन्मयजी शास्त्री खनियांधाना।

महाराष्ट्र प्रान्त

1. जलगाँव : पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, **2. मुम्बई (विक्रोली) :** पण्डित किशोरजी शास्त्री रहटगांव, **3. मुम्बई (सीमंधर जिनालय) :** पण्डित जिनचंदजी शास्त्री कोल्हापुर, **4. मुम्बई (दादर) :** पण्डित संजय शास्त्री जेवर, **5. मुम्बई - घाटकोपर (वे.) :** पण्डित अभिषेक शास्त्री गजपंथा, **6. मुम्बई - मलाड वेस्ट (एवरशाइन नगर) :** डॉ. महावीर प्रसादजी शास्त्री उदयपुर, **7. मुम्बई - दहिसर :** पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुंबई, **8.नागपुर :** ब्र. नन्हेभैया सागर, **9. वाशिम (जवाहर कालोनी) :** पण्डित जयकुमारजी जैन बांरा, **10. मलकापुर :** पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री अहमदाबाद, **11. एलोरा :** पण्डित गुलाबचंदजी शास्त्री गोवर्धन, **12. जयसिंगपुर :** पण्डित विजयसेन शास्त्री आलते, **13. मुम्बई (बसई) :** पण्डित सौरभजी शास्त्री शहपुरा, **14. मुम्बई :** पण्डित विपिनकुमारजी शास्त्री आगरा, **15.मुम्बई :** पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई,**16. मुम्बई :** पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, **17. नातेपुते :** पण्डित शीतल रायचंद दोशी, **18. शिरडशहापुर :** पण्डित प्रशान्त काले शास्त्री राजुरा, **19. सेलू :** पण्डित चिन्मय शास्त्री पिडावा, **20. पुणे (स्वाध्याय मंडल) :** विदुषी राजकुमारी बेन दिल्ली, **21. मुम्बई (अन्धेरी) :** पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, **22. चिखली (महावीर मन्दिर) :** पण्डित स्वप्निलजी जैन ध्रुवधाम, **23. देवलगांवराजा :** पण्डित अभिजीतजी शास्त्री जयपुर, **24. कोल्हापुर :** पण्डित अमोलजी निरवाने

शास्त्री ध्रवधाम, **25. मालसिरस :** पण्डित चंदमलजी शाह, नातेपुते, **26. हिंगोली (शान्तिनाथ मंदिर) :** पण्डित आशीषजी महाजन शास्त्री जयपुर, **27. सदाशिवनगर :** पण्डित अनिरुद्धजी शास्त्री कोटा, **28. यवतमाल :** पण्डित आदेशजी बोरालकर शास्त्री नागपुर, **29. कारंजा :** डॉ. आर.के.बंसल अमलाई, **30. रिसौड़ :** श्रीमती लता रोम अकोला, **31. चिखली (आदिनाथ मंदिर):** पण्डित विजयकुमारजी राउत, **32.बैलोरा :** पण्डित शांतिकुमारजी देगांवकर कलमनुरी, **33. वरुड :** पण्डित गोमटेश चौगुले जयपुर, **34. मालेगांव :** पण्डित करण दिगम्बरे ध्रुवधाम, **35. हिंगोली :** पण्डित विवेक जैन छिंदवाडा, **36. मुम्बई भायंदर (जैसल पार्क) :** पण्डित प्रवेशजी शास्त्री करेली, **37. फलटन :** पण्डित सनतजी शास्त्री रूकडी, **38. हेरले :** पण्डित अनिलजी शास्त्री आलमान, **39.तमदलगे :** पण्डित अमोलजी शास्त्री पाटील, **40. मलकापुर (कोल्हापुर) :** पण्डित महेशजी शास्त्री, **41. कोल्हापुर (शाहुपुरी) :** पण्डित भरतजी शास्त्री बाहुबली, **42. दानोली :** पण्डित किरणजी पाटील, **43. सांगली :** पण्डित प्रसन्न शेटे शास्त्री कोल्हापुर, **44. हेरले :** पण्डित श्रेणिकजी शास्त्री ध्रुवधाम, **45. सेनगांव :** पण्डित विपुलजी शास्त्री जयपुर, **46. बडगांव :** पण्डित शीतलजी शास्त्री आलमान हेरले, **47. कोथळी :** पण्डित सुरेन्द्रजी पाटील मलकापुर **48. बोरगांव :** पण्डित सुधाकरजी शास्त्री इण्डी, **49. कोल्हापुर (रुइकर कॉलोनी) :** पण्डित शीतलजी हेरवाडे शास्त्री, **50.अक्कलकोट :** पण्डित चेतनजी शास्त्री, **51. नागपुर :** पण्डित मनीषजी सिद्धांत, **52.नागपुर :** पण्डित सुकुमारजी शास्त्री शिरदवाड़, **53. नागपुर :** पण्डित रवीन्द्रजी महाजन शास्त्री बीड, **54. कवठेपिराण :** विदुषी स्वयंप्रभा शास्त्री सांगली, **55. भोसे :** पण्डित नितिनजी शास्त्री कोठेकर, **56. जयसिंगपुर (मगदुम सोसायटी) :** पण्डित संयमजी शेटे शास्त्री कोल्हापुर, **57. सांगली (शान्तिनाथ मन्दिर) :** पण्डित अभिजीतजी शास्त्री अलगौंडर, **58. मुम्बई (चेम्बूर) :** पण्डित सुमेरचंदजी जैन बेलोकर, **59. पुणे :** पण्डित बाहुबलि ढोकर, **60. भण्डारा :** पण्डित दीपकजी डांगे शास्त्री शेणगांव, **61. नासिक :** पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री बरां, **62. वर्धा :** पण्डित देवेन्द्रजी बंड शास्त्री नागपुर, **63. वर्धा :** पण्डित प्रदीपजी शास्त्री ध्रुवधाम, **64. औरंगाबाद :** पण्डित संजयजी राउत शास्त्री रिसोड, **65. मुम्बई :** पण्डित फूलचंदजी शास्त्री उमराला, **66. मुम्बई (भायंदर) :** पण्डित वरुणजी शाह शास्त्री, **67. मुम्बई (मलाड) :** पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री गोरगांव, **68. मुम्बई :** पण्डित राहुलजी शास्त्री अलवर, **69. कारंजा (आश्रम) :** पण्डित आलोकजी शास्त्री जालना, **70. कारंजा (लाड) :** पण्डित चिन्तामण शास्त्री औरंगाबाद, **71. नागपुर (लक्ष्मीनगर) :** पण्डित परागजी महाजन शास्त्री कारंजा।

उत्तरप्रदेश प्रान्त

1. बड़ौत : पण्डित शौर्यजी मंडाना, **2. खतौली :** डॉ. नेमिचंदजी शास्त्री खतौली, **3. भौगाँव :** पण्डित धनेन्द्र सिंघल ग्वालियर, **4. कुरावली :** पण्डित प्रकाशचंदजी मैनपुरी, **5. कायमगंज :** पण्डित विमलचन्दजी जैन जलेसर, **6. मेरठ (तीरगरान) :** पण्डित गुलाबचन्दजी जैन बीना, **7. जेतपुर कलां :** पण्डित अजितकुमारजी मडावरा, **8. मैनपुरी :** पण्डित विनोदकुमारजी गुना, **9. रूडकी :** पण्डित अनिलजी 'धवल' भोपाल, **10. शिकोहाबाद :** पण्डित पुष्पेन्द्रजी जैन बानपुर, **11. एत्मादपुर :** पण्डित मनोजकुमारजी मुजफ्फरनगर, **12. अमरोहा :** पण्डित गोकुलचंदजी सरोज ललितपुर, **13. धामपुर :** पण्डित अंकितजी जैन छिन्दवाड़ा, **14. गुरसराय :** पण्डित नन्दकिशोरजी गोयल विदिशा, **15. कानपुर (किदवई नगर) :** पण्डित मनोजी शास्त्री अभाना, **16. मुजफ्फरनगर :** पण्डित अजितकुमारजी फिरोजाबाद, **17. शैरकोट :** पण्डित प्रदीपकुमारजी शास्त्री धामपुर, **18.**

सुलतानपुर चिलकाना : पण्डित विवेकजी जैन कोटा, **19. बावली :** पण्डित अखिलेशजी जैन शास्त्री कोटा, **20. खेकड़ा :** विदुषी प्रमिलाबेन इन्दौर, **21. अलीगढ़ (मंगलायतन) :** पण्डित कोमलचन्दजी जैन टडावाले, **22. अलीगढ़ (मंगलायतन) :** पण्डित अरुणकुमारजी शास्त्री अलवर, **23. अलीगढ़ (मंगलायतन) :** पण्डित सुधीरकुमारजी शास्त्री जबलपुर, **24. अलीगंज :** पण्डित सन्मतिजी जैन मंगलायतन, **25. रानीपुर (झांसी) :** पण्डित प्रतीकजी शस्त्री जबलपुर, **26. कुरावली :** पण्डित संतोष सावजी शास्त्री, **27. खतौली (कानूनगोयान) :** पण्डित संजयजी अजनौर, **28. गंगेरू :** पण्डित आत्मप्रकाशजी शास्त्री खड़ेरी, **29. कानपुर (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित सतीशजी जैन कारंजा, **30. लखनऊ :** पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, **31.खतौली (कानूनगोयान) :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री सिलवानी, **32. बड़ौत :** पण्डित दीपकजी सेमारी बांसवाड़ा, **33. जसवंतनगर :** पण्डित अरविन्दजी शास्त्री टीकमगढ, **34. लखनऊ :** पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री बकस्वाहा, **35. धामपुर :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मडदेवरा।

गुजरात प्रान्त

1. बडौदरा : पण्डित मनीष शास्त्री खतौली, **2. नरौड़ा-अहमदाबाद :** पण्डित संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा, **3. अहमदाबाद (मणिनगर) :** पण्डित मनोजकुमारजी जबलपुर, **4. अहमदाबाद (बहेरामपुरा) :** पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री खनियाधाना, **5. भावनगर :** पण्डित मीठाभाई दोशी हिम्मतनगर, **6. दाहौद :** पण्डित नागेशजी पिडावा, **7. हिम्मतनगर :** पण्डित अनुभव शास्त्री कानपुर, **8. अहमदाबाद (आशीषनगर) :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री सिलवानी, **9. मौरवी :** मंगलार्थी अभिषेक जैन सिहोर, **10. अहमदाबाद (पार्श्वनाथ चैत्यालय-रामेश्वर पार्क) :** पण्डित ज्ञाता झांझरी उज्जैन, **11. चैतन्यधाम - अहमदाबाद :** पण्डित सचिनजी शास्त्री गढी, **12. वापी :** पण्डित नन्दकिशोरजी शास्त्री काटोल, **13. अहमदाबाद पालडी :** पण्डित मेहुलजी मेहता कोलकाता, **14.जहैर :** पण्डित विवेकजी शास्त्री भिण्ड, **15. ओढव :** पण्डित दीपकजी कोठडिया अहमदाबाद, **16. जैतपुर :** पण्डित नकुलजी शास्त्री जयपुर, **17.तलोद :** पण्डित मधुकरजी जलगांव, **18. रखियाल :** पण्डित राजेशजी जैन जबलपुर, **19. अहमदाबाद (ओढव) :** पण्डित चैतन्यजी शास्त्री बकस्वाहा।

राजस्थान प्रान्त

1-28. जयपुर : डॉ.श्रेयांसकुमारजी शास्त्री, पण्डित रमेशचंदजी लवाण, डॉ. भागचंदजी जैन बड़ागांव, डॉ. नीतेशजी शाह डडूका, पण्डित मनीषजी कहान खड़ैरी, पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित परेशजी शास्त्री अरथुना, पण्डित संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा, पण्डित संजीवजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित गजेन्द्रजी बड़ामलहरा, पण्डित सुनीलजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित ज्ञानचंदजी शास्त्री कुडीला, पण्डित चन्द्रप्रभातजी शास्त्री बड़ामलहरा, पण्डित अनिलजी शास्त्री सोजना, पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित अरहन्तवीरजी शास्त्री फिरोजाबाद, पण्डित विजयजी मोदी शास्त्री, पण्डित प्रशांतजी शास्त्री मौ, पण्डित अभिजीतजी पाटील कोल्हापुर, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री दलपतपुर, पण्डित संतोषजी शास्त्री बकस्वाहा, श्रीमती कमला भारिल्ल जयपुर, पण्डित विशेष शास्त्री बड़ामलहरा, **29. अजमेर :** पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, **30. कोटा (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित मनोजजी शास्त्री करेली, **31. कुशलगढ (तेरापंथ) :** पण्डित भंवरलालजी जैन कोटा, **32. उदयपुर (मुमुक्षु मंडल) :** पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर,

33. उदयपुर (से.-3) : पण्डित राजीव शास्त्री थानागाजी, **34. उदयपुर (से.-11) :** पण्डित नितुलजी शास्त्री इन्दौर, **35. उदयपुर- गायरियावास :** पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री जयपुर, **36. बिजौलिया :** पण्डित निर्मलकुमारजी एटा, **37. लूणदा :** पण्डित रवीन्द्रजी शास्त्री बकस्वाहा, **38. उदयपुर (केशवनगर) :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री झामरकोट, **39. बाँसवाड़ा (खांदू कालोनी) :** ब्र. चन्द्रसेनजी जैन शिवपुरी, **40. बाँसवाड़ा (ध्रुवधाम):** पण्डित कमलेशजी शास्त्री मौ, **41 शहाबाद :** पण्डित भगवती शास्त्री समरानिया, **42. कोटा (इन्द्रविहार) :** पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा, **43. भीलवाड़ा :** पण्डित सौरभजी शास्त्री इन्दौर, **44. बीकानेर :** पण्डित रामनरेशजी शास्त्री लाडनूं, **45. कुशलगढ (आदिनाथ) :** पण्डित सुमितजी शास्त्री भिण्ड, **46. पिड़ावा :** ब्र. कल्पनाबेन जयपुर, **47. उदयपुर (सन्मति भवन) :** पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री भीण्डर, **48. चित्तौड़गढ (कुम्भानगर) :** पण्डित पलाशजी शास्त्री डडूका, **49. जौलाना :** पण्डित रजतकांतजी शास्त्री खनियांधाना, **50. भीण्डर :** पण्डित मिश्रीलालजी जैन केकड़ी, **51. अलीगढ :** पण्डित पदमकुमारजी कटारिया केकड़ी, **52. कूण :** अमितेन्द्रजी शास्त्री खनियांधाना, **53. कुरावड़ :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री दिल्ली, **54. झालीजी का बराना :** पण्डित अनुभवजी शास्त्री कोटा, **55. कानौड़ :** पण्डित संदीपजी शास्त्री शहपुरा, **56. वैर :** पण्डित अनुपमजी शास्त्री भिण्ड, **57. देवली (शान्तिनाथ मंदिर) :** पण्डित अभिनयजी जैन कोटा, **58. सांकरोदा :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री चिनौआ, **59. पीसांगन :** पण्डित साकेतजी शास्त्री जयपुर, **60. जयपुर (शक्तिनगर) :** पण्डित जयेश शास्त्री उदयपुर, **61. टोकर :** पण्डित अभिनवजी मोदी मैनपुरी, **62. जयथल :** पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी शास्त्री आमेर, **63. वल्लभनगर :** पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, **64. अलवर :** पण्डित प्रेमचन्दजी शास्त्री भौंती, **65. अलवर (60 फीट रोड़) :** पण्डित अजितजी शास्त्री फुटेरा, **66. कोटा (छावनी) :** पण्डित प्रेमचन्दजी बजाज कोटा, **67. कोटा (मुमुक्षु आश्रम) :** पण्डित सौरभ शास्त्री गढाकोटा, **68. बेगू :** पण्डित नियमजी शास्त्री सिलवानी, **69. सेमारी :** पण्डित आशीषजी शास्त्री टोंक, **70. निवाई :** पण्डित शिखरचंदजी शास्त्री केवलारी, **71. झालरापाटन :** पण्डित विक्रान्तजी शास्त्री पाटनी झालरापाटन, **72. प्रतापगढ :** पण्डित सुनीलजी शास्त्री निम्बाहेड़ा, **73. अजमेर :** पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, **74. कोटा (रामपुरा) :** पण्डित समकितजी शास्त्री टोंक ध्रुवधाम, **75. लाखेरी :** पण्डित अमितजी शास्त्री कोटा ध्रुवधाम, **76. अलवर (आदिनाथ मंदिर) :** पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री कारंजा ध्रुवधाम, **77. बोहेरा :** पण्डित अक्षय चव्हाण ध्रुवधाम, **78. कुचामनसिटि :** पण्डित राजेशजी शास्त्री गुढा, **79. अलवर :** पण्डित समकितजी शास्त्री मोदी सागर, **80. छबड़ा :** पण्डित प्रमोदजी जैन (बिजौलिया) कोटा, **81. लकड़वास :** पण्डित नेमिचंदजी जैन ध्रुवधाम, **82. डबोक :** पण्डित राहुलजी जैन ध्रुवधाम, **83. रावतभाटा :** पण्डित संजयजी शास्त्री हरसौरा, **84. उदयपुर (सन्मति भवन) :** पण्डित सन्दीपजी शास्त्री बिनौता, **85. किशनगढ :** पण्डित सनतजी शास्त्री बकस्वाहा, **86. जयपुर (सूर्यनगर) :** पण्डित शनिजी शास्त्री खनियांधाना, **87. बूँदी (मल्लाशाह मंदिर) :** पण्डित धर्मचंदजी जयथल, **88. सरदारशहर :** पण्डित निपुणजी शास्त्री टीकमगढ, **89. बांसवाड़ा :** पण्डित विमोशजी शास्त्री खड़ेरी।

दिल्ली व अन्य प्रांत

1. 2. कोलकाता : पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा एवं डॉ. ममता जैन, **3. बैंगलोर :** पण्डित अरहन्तप्रकाश झांझरी उज्जैन, **4. एरनाकुलम :** पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री जबलपुर, **5.**

(शेष पृष्ठ 4 पर...)

पाठकों के पत्र

वीतराग-विज्ञान के हीरक जयन्ती विशेषांक को पढ़कर **सोलापुर (महा.) से डॉ. प्रकाशचंदजी खड़के** लिखते हैं कि -

'वीतराग-विज्ञान विशेषांक में डॉ. भारिल्ल के साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन बहुत बढ़िया हुआ है। उन सभी समीक्षकों को मैं धन्यवाद देता हूँ। संपादक महोदय को भी धन्यवाद। उचित समय पर उचित व्यक्ति का उचित साहित्य (समीक्षा) आपने प्रकाशित किया है। आप सफल संपादक हैं। डॉ. साहब का 75वाँ जन्मदिन, अमृतयोग है; आपने जनसामान्य को अमृतपान कराया है। इसी अवसर का लाभ उठाकर सेमिनार आयोजित करके मुमुक्षुओं को ज्ञान-दान दिया है। संयोजक की कल्पना की प्रशंसा के लिए मेरे पास पर्याप्त शब्द नहीं हैं। प्रत्येक व्यक्ति डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की विद्वत्ता से परिचित हो गया है। डॉ. साहब बहुत बड़े आदमी हैं। आपने बड़े ग्रन्थ लिखे हैं, लम्बे भाषण दिए हैं। बड़े-बड़े ग्रन्थों (जैनागम) को आत्मसात करके सबके गले उतारा है। सचमुच भारिल्लजी श्रेष्ठ साहित्यकार हैं, क्रांतिकारी हैं, शान्तिदूत हैं, युगपुरुष हैं, आदर्श गुरु हैं, दिगम्बरों के देवता हैं, प्रवचनकारों के निर्माता हैं। डॉ. भारिल्लजी का सम्पूर्ण जीवन और शरीर जिनवाणी के लिये समर्पित है। आपने विश्व में एक जैन अध्यात्म केन्द्र का निर्माण करके ईश्वरीय कार्य किया है।

''उनको हमने ठहरा दिया है, पानी की एक झील बनाकर,
दरिया बना देते तो, बहुत दूर निकल जाते।''

डॉ. भारिल्लजी की वाणी में शक्ति है, हृदय में जिनभक्ति है। आपने जैनागम के रहस्य को खोलकर, सबके सामने रखा है। आंधी, तूफान को सहकर वटवृक्ष की तरह अविचल बनकर भगवान की वाणी को फिर से प्रतिध्वनित किया है। आचार्य कुन्दकुन्द, आचार्य अमृतचंद्र, आचार्य जयसेन का कार्य अविरत, अक्षुण्ण बनाए रखा है। आपने महान पुण्य का कार्य किया है। डॉ. भारिल्ल की ओर अंगुली निर्देश करके हम छात्रों को समझाते हुए कहते हैं - ऐसे होते हैं पण्डित, ऐसे होते हैं गणधर। देश-विदेश के ज्ञान पिपासु-जिज्ञासु को आपने मंत्रमुग्ध किया है। जैनवृक्ष के पतझड़ में आप फिर से बहार लाए हैं। डॉ. भारिल्लजी ने आधुनिक समाज को नयी चेतना दी है, जीवन जीने की दृष्टि दी है। समाज को आज डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की बहुत आवश्यकता है। डॉ. साहब -

'जिओ हजारों साल, साल के दिन हो पचास हजार।'

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में
पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा आयोजित

चौदहवाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

(रविवार, दिनांक २ अक्टूबर से मंगलवार, दिनांक ११ अक्टूबर २०११ तक)

आपको सूचित करते हुये अत्यंत हर्ष हो रहा है कि राजस्थान की प्रसिद्ध गुलाबी नगरी जयपुर में आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सदुपदेश से संस्थापित ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित होनेवाले आध्यात्मिक शिविरों की शृंखला में चौदहवाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर इस वर्ष रविवार, दिनांक 2 अक्टूबर से मंगलवार दिनांक 11 अक्टूबर 2011 तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।

इस शिविर में लोकप्रिय प्रवचनकार डॉ. हुकमंचदजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना आदि अनेक विद्वानों का प्रवचनों, कक्षाओं एवं तत्त्वचर्चा के माध्यम से लाभ मिलेगा।

आप सभी को शिविर में सपरिवार इष्ट मित्रों सहित पधारने हेतु हमारा भाव भीना आमंत्रण है।

विशेष कार्यक्रमों के अन्तर्गत दिनाँक 6 अक्टूबर को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के पात्रों का अभिनन्दन समारोह एवं दिनाँक 4 अक्टूबर को श्री टोडरमल स्नातक परिषद् का उत्तरप्रांतीय सम्मेलन होगा।

कार्यकारिणी पुनर्गठित

औरंगाबाद (महा.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की कार्यकारिणी का पुनर्गठन किया गया। कार्यकारिणी निम्नानुसार है ह्न

अध्यक्ष-श्री चैतन्यजी गाडेकर, **सचिव(मंत्री)**-पण्डित किशोरजी धोंगडे, **कोषाध्यक्ष**-पण्डित चिन्तामणि भूस, **प्रचार मंत्री**-श्री कैलाश धोंगडे, **संगठन मंत्री**-पण्डित आतीश जोगी, **सदस्य**-श्री संजयजी धुमाळ, श्री सचिनजी महिंद्रकर, श्री रविजी संगवे, श्री सचिनजी भूस, श्री देवेन्द्रजी गाडेकर, श्री रविजी अंबेकर, **मार्गदर्शक**-पण्डित संजयकुमारजी राऊत, पण्डित गुलाबचंदजी बोराळकर, श्री रत्नाकरजी गाडेकर चुने गये।